Character of Geographic Knowledge during Medieval Period.

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद भूगोल में मध्यकाल आरंभ होता है. इसे 3 उपविभागों में विभाजित किया जा सकता है —.

1. पूर्व मध्यकालीन युग (300 - 700 A.D.)
2. अन्तर्मध्यकालीन युग (700 - 1100 A.D.)
3. उत्तर मध्यकालीन युग (1100 - 1700 A.D.).

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद भूगोल में गिरावट आने लगी। इसके परिणामस्वरूप भूगोल में एक ऐसा काल आया, जिसे विद्वानों ने अंधकार युग (Dark Age) कहा. कुछ भूगोलवेत्ता इसका समय 300 - 700 A.D. मानते हैं जबकि अन्य 300 - 1200 A.D. मानते हैं।

अंधकार युग में ईसाई धर्म ग्रंथों का स्पष्ट प्रभाव होने से पूर्व में स्थापित भौगोलिक मान्यताओं को झूठा बताकर इसके विपरीत दिशा में विचार रखे जाने लगे। धर्म का प्रभाव रहने से बाइबिल तथा पोप ही ज्ञान के केन्द्र बिन्दु बने रहे। इस काल में धार्मिक मतों को भौगोलिक तथ्यों पर कठोरता से लादा गया। इस काल में पृथ्वी को आयताकार प्रमाणित करने का प्रयास किया गया तथा बताया कि पृथ्वी सपाट एवं आयताकार है। इसके चारो ओर जल है. Ezikiel की शास्त्रीय उक्ति है —.

"यह जेरुसलम है, मैंने इसे राष्ट्रों के मध्य स्थापित किया है तथा देश इसके चारो ओर है."

अंधकार युग में मानचित्र कला का बहुत ह्रास हुआ. इस काल का एक महत्वपूर्ण मानचित्र Orbis Terrarum नाम से जाना गया. इस मानचित्र में जेरुसलम को मध्य में दिखाया गया है.

Oriens:

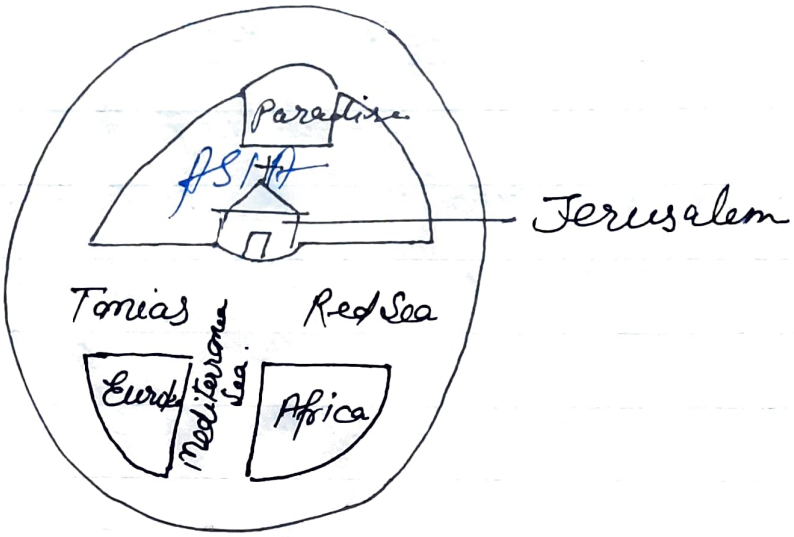

✓ अंधकार युग के प्रमुख भूगोलवेत्ता थे —.

हेयरफोर्ड, सेन्ट बीटस, पॉली हिस्टर, कैपेल्ला, एथेनस, पोपस, ओरोसियस, ईसीडोर, बसिल.

Geographic Thought During Arabic Period.

अरब भूगोलवेत्ताओं द्वारा भूगोल में प्रगति के कारण —

(a) अरब साम्राज्य का विस्तार
(b) यूनानी सभ्यता के देशों पर विजय
(c) परिवहन मार्गों का विकास
(d) व्यापार में वृद्धि
(e) भारतीय संस्कृति
(f) मरुस्थलीय स्वच्छ वातावरण
(g) अरब शासकों का प्रोत्साहन

Contribution of Arab Geographers →

(a) भौगोलिक ज्ञान की रक्षा
(b) खगोलिकी और गणितीय भूगोल का विकास
(c) अक्षांश एवं देशान्तरों का निर्धारण
(d) प्रादेशिक भूगोल
(e) भौतिक भूगोल
(f) मानव भूगोल
(g) भौगोलिक वर्णन ग्रंथ
(h) भौगोलिक कोष
(i) अरब मानचित्रकला

प्रमुख अरब भूगोलवेत्ता —

अल मसूदी, अल बेरुनी, अल इदरीसी, इब्न बतूता, इब्न खालदून, अल याकूबी, इब्न हॉकल इत्यादि थे।

① Al-Masudi - 890-956 ई०.

इनका जन्म बगदाद में हुआ था। उसने एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप के कई देशों की यात्राएँ की थी। उसकी मुख्य रचनाएँ थी — (a) Meadows of Gold & mines of precious stones

(b) Extortation & Inspection.

(c) Guide to Gujet.

(d) Time schedule.

(a) अल मसूदी ने पृथ्वी और आकाशीय पिण्डों के बीच सह सम्बन्ध बताया. उन्होंने पृथ्वी की आकृति को गोलाकार बताया। उनके अनुसार सात विश्व को चारो ओर से महासागर घेरे हुए है। उनका मानना था कि पृथ्वी के चारो ओर 7 ग्रह — बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि अपने 2 मार्ग पर चक्कर लगाते है।

(b) भौतिक भूगोल से सम्बन्धित तथ्यों में उन्होंने नदियों के कार्यों का विस्तृत वर्णन किया।

(c) उन्होंने नियतिवादी विचारधारा का समर्थन किया।

② Al-Beruni - 973-1049 ई०.

इनका पूरा नाम अबुल रहमान मो० अल बेरुनी था। इनका जन्म उज्बेकिस्तान के बीसन में हुआ था। उन्होंने महमूद गजनवी के साथ रहकर कई देशों की यात्राएँ की. उसकी प्रसिद्ध कृतियाँ थी —

(a) The Book of India

(b) Precious Stones

(c) Boundaries of Places & Corrections of Distances.

अल बेरुनी ने अपने वर्णनों में खगोल विज्ञान और गणित को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने विश्व के महत्वपूर्ण स्थानों के अक्षांश और देशान्तर ज्ञात किए। उन्होंने पृथ्वी को गोलाकार और ब्रह्मांड के मध्य में माना। अल बेरुनी ने हिमालय, अरावली और विन्ध्याचल पर्वतों का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने गंगा, यमुना, सिंधु, नर्मदा, रावी, व्यास आदि नदियों का उल्लेख किया। उन्होंने उज्जैन को भारत का प्रधान नगर बताया।

③ Al-Idrisi - 1099-1166 ई०

इनका पूरा नाम अबू-अब्द-अल्लाह मुहम्मद अल इदरीसी था। उन्होंने भूमध्यसागर के तटवर्ती भागों की यात्रा की। इनके प्रमुख ग्रंथ थे –
(a) New Geography.
(b) Amusement for Him who Desires to Travel Around the World. नामक विश्वकोष

उन्होंने विश्व के प्रदेशों का वर्णन जलवायु के आधार पर किया। इदरीसी ने विश्व को अक्षांश व देशान्तरों के विस्तार के आधार पर 7 मुख्य जलवायु खण्डों में बाँटा। उन्होंने हिन्द महासागर को खुला सागर माना तथा कैस्पियन सागर को विश्व महासागर की खाड़ी न मानकर उसे बन्दरगाह माना। उन्होंने पृथ्वी को गोलाकार और ब्रह्मांड के मध्य में माना। उन्होंने द० दिशा को मानचित्र में ऊपर दर्शाया।

④ Ibn-Battuta: उन्होंने अपनी यात्राओं के माध्यम से उस समय के ज्ञात तीनों महाद्वीपों की यात्रा की। उन्होंने अपनी यात्राओं का विवरण Rehla नामक पुस्तक में दिया। उन्होंने Misra में नील नदी को सर्वो

नदियों में बड़ा और पवित्र माना. उन्होंने China में रहकर वहाँ के भौगोलिक विवरण दिये। India में रहकर यहाँ की नदियों सिंधु, गंगा, सतलज, यमुना आदि का वर्णन किया। उन्होंने Africa के सहारा मरुस्थल और आस-पास के क्षेत्रों का विवरण दिया।

Ibn. Khalden. → इन्हें अंतिम अरब भूगोलवेत्ता माना जाता है, उन्होंने Mukaddimah नामक पुस्तक में मानव और सांस्कृतिक भूगोल पर प्रकाश डाला. इसे 6 खंडों में लिखा गया।

इनके अतिरिक्त अल-मसूर, अल फर्घानी, अल-बत्तानी आदि प्रमुख थे।

Late Medieval Geography : Renaissance Era.

13 वीं शताब्दी — 17 वीं शताब्दी.

इस युग को 'यात्रा युग अथवा खोज युग' भी कहा जाता है। प्रमुख खोजकर्ता थे - विलियम रूबरेक, मार्को पोलो, वास्को-डी-गामा, कोलम्बस, अमेरिगो वेस्पुक्की, मैगलन, कैप्टन कुक, कॉपरनिकस, गैलीलियो, केपलर जोन्स तथा न्यूटन थे।

इस काल के महत्वपूर्ण भूगोलवेत्ता थे —.

1. Cluverius - 1580-1622 ई०.

यह जर्मन भूगोलवेत्ता था जिसने कई ग्रंथ लिखे —

(a) The Historical Geography of Germany.
(b) An Introduction to Universal Geography. → यह 6 खंडों में प्रकाशित हुई जिसके प्रथम खंड में पृथ्वी का सामान्य भूगोल तथा गणितीय भूगोल का विवरण है तथा अंतिम पाँच खंडों में यूरोप, उ० अफ्रीका, प० एशिया, नई दुनिया और अन्य देशों का विवरण है।

2. Bernhard Varenius - 1622-1650 ई०.

इन्होंने जापान के इतिहास और भूगोल नामक एक पुस्तक लिखी. इसके बाद 'Geographia Generalis' नामक ग्रंथ लिखा। इसका सिर्फ एक खंड ही प्रकाशित हो पाया. इसके दो खंड थे — (a) सामान्य भूगोल (विश्व)
(b) विशिष्ट या प्रादेशिक भूगोल

वारेनियस ने भूगोल को नवीन दृष्टिकोणों में व्यवस्थित किया।

उन्होंने सामान्य भूगोल को विश्व भूगोल कहा। इसमें भूगोल के नियमों और सिद्धान्तों का वर्णन किया। वारेनियस ने विशिष्ट भूगोल को प्रादेशिक भूगोल कहा।

वारेनियस ने सूर्यकेन्द्रित विचारधारा के आधार पर ही पृथ्वी को अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य की परिक्रमा करते हुए माना। उन्होंने भौतिक भूगोल में पर्वतों का विस्तार, उनकी उत्पत्ति, अनावृतिकरण, नदियों के कार्य, मरुस्थल आदि को सम्मिलित किया। इनके द्वारा वायु के लक्षण एवं वायु प्रवाह को सूर्य से related माना। इनके ग्रंथों में मानव भूगोल के विभिन्न पक्षों के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखने को मिलता है।